

## मराठी लोक-संस्कृति के प्रचार-प्रसार में घुमंतू जातियों का योगदान

\* संतोष वसंत कांबले

पीएच.डी. शोधार्थी (हिंदी)

कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगाँव

मोबाईल क्रमांक- ८१२५९ ८११९४

ई-मेल : shreyashju@yahoo.co.in

\*\* पूनम शर्मा

पीएच.डी. शोधार्थी (हिंदी),

उच्च शिक्षा और शोध संस्थान,

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा मद्रास

त्यागराय नगर, चेन्नै- ६०० ०१७

### सारांश

‘वसुधैव कुटुंबकम्’ की संज्ञा प्राप्त हमारा भारत वर्ष विभिन्नता में एकता को अपने में समाहित किए हुए है। भारत भूमि ऐसी पावन भूमि है जहाँ विभिन्न रंग-रूप, वेश-भूषा, धर्म-जाति तथा समुदाय व संस्कृति को मानने वाले लोग भाई-चारे व समन्वय की भावना के साथ निवास करते हैं।

भारत के विभिन्न राज्यों में भिन्न-भिन्न संस्कृतियों के दर्शन हमें अनायास ही प्राप्त हो जाते हैं जिन सभी का अपना अलग-अलग इतिहास एवं उद्देश्य है। इनमें से महाराष्ट्र राज्य की मराठी लोक-संस्कृति का वैशिष्ट्य अपने में अनुपम सौंदर्य को धारण करने के कारण महत्वपूर्ण है जिसकी लोक-संस्कृति के सौंदर्य का प्रदर्शन वहाँ पायी जाने वाली विभिन्न मराठी घुमंतू जातियों के द्वारा प्रकट होता है।

**बीज शब्द** : वसुधैव कुटुंबकम्, घुमंतू, गोंधली, नागमंत्रि,

इन प्रमुख मराठी घुमंतू जातियों में से कुछ जातियाँ इस प्रकार से हैं –

### गोंधली-

मराठी घुमंतू जाति के अंतर्गत केवल जाति से गोंधली लोगों के द्वारा ही गोंधल का आयोजन किया जाता है। गोंधल मराठी लोक-संस्कृति एवं लोक-जीवन का अत्यंत महत्वपूर्ण भाग है। इसके द्वारा देवी-देवताओं की उपासना एवं पूजा को रखा जाता है तथा परिवार व समाज में शुभ-कार्यों के अवसर पर गोंधल का आयोजन किया जाता है। गोंधल के अंतर्गत तुलजाभवानी और रेणुका जैसी दो देवी-शक्तियों की उपासना की जाती है तथा उनके प्रति श्रद्धा भाव रखते हुए उपासना कार्य किया जाता है। गोंधली के महात्म्य का उल्लेख हमें नामदेववादी संत परंपरा व महानुभव संत परंपरा में भी देखने को मिलता है।

गोंधली के आयोजन हेतु केवल जाति के गोंधली लोगों का होना अनिवार्य है क्योंकि इसके लिए परंपरागत प्रथानुसार दीक्षा लेना अनिवार्य होता है। गोंधली की वेश-भूषा अनुपम होती है। जिसके अनुसार गोंधली जाति व लोक-संस्कृति को अपनाने वाले लोग गले में कवडियों की माला धारण करते हैं। कवड़ी अर्थात देवी द्वारा संहार किए गये असुरों के शीश का प्रतीक चिह्न। गोंधल जाति द्वारा किये जाने वाले गोंधल क्रिया को बड़े विधि-विधान द्वारा पूर्ण किया जाता है। जिसके लिए रात भर जागकर नीतिपरक गीत गाकर लोगों को उपदेश देने का कार्य संपन्न किया जाता है। गोंधल की संरचना भी वैशिष्ट्यपूर्ण ढंग से होती है जिसके लिए गोंधली को कमरे के मध्य भाग में एक चौरंग पर नया वस्त्र रखकर उस पर चावल के दानों द्वारा चौक पूरा जाता है। चौके के चारों कोनों पर चार एवं मध्य में खोपरा रखा जाता है। चौक के मध्य में कलश स्थापित किया जाता है तथा कलश के ऊपर आम के पत्ते अथवा पान के पत्तों को रखकर उनके ऊपर नारियल स्थापित किया जाता है तत्पश्चात् यजमान के द्वारा देवी की स्थापना कर पूजा-अर्चना का कार्य किया जाता है इसके लिए यजमान चौरंग के आगे पाँच पत्तल रखकर उस पर चावल डालता है तथा आटे द्वारा निर्मित दीपक रखता है। चौरंग के चारों तरफ गन्ने खड़े किए जाते हैं तथा बीचोंबीच फूलों की माला बाँधकर कलश के ऊपर स्थापित नारियल को माला पहनाई जाती है। गोंधल में मशाल की आवश्यकता होती है।

प्रत्यक्ष रूप से गोंधल की शुरूआत करने से पहले गण गाकर देवी जगदंबा को याद किया जाता है तत्पश्चात् समस्त देवी-देवताओं को गोंधल के लिए आमंत्रित किया जाता है-

**“तुलजापुर की माता गोंधल को आ जाओ,**

कोल्हापुर की लक्ष्मी गोंधल को आ जाओ,  
माहुर की रेणुका माता गोंधल को आ जाओ,  
गोंधल सजाया गोंधल को आ जाओ।”

गोंधल के प्रथम भाग में देवी की प्रशंसा की जाती है। देवता प्रतिस्थापना, पूजा, गण, गवलण, आमंत्रण और नमन के बाद अंतरंग प्रारंभ होता है। इसमें आख्यान प्रस्तुत किया जाता है तत्पश्चात् आरती की जाती है तथा गोंधल समाप्त होता है।

गोंधल के अंदर मुख्य गोंधली गीत एवं कथा के माध्यम से मनोरंजन एवं जीवन यापन के उपदेशों से युक्त गीत गाये जाते हैं तथा गीत के मध्य ही प्रश्न पूछकर गोंधल को गति प्रदान करने का कार्य सहायक गोंधली तथा संबल एवं तुणतुणे बजाकर करते हैं।

गोंधली जब आख्यान बताता है तब आख्यान में रंग भरने के लिए वर्तमान में घट रहें प्रसंगों का भी वर्णन प्रस्तुत किया जाता है। महाराष्ट्र के अनेक घरानों में मातृदेवी के नाम से गोंधल डालने की प्रथा रही है। गोंधल की प्रत्येक विधि में महिलाएँ भी अपना योगदान प्रदान करती हैं। गोंधली जिन आख्यानों में कथा प्रस्तुत करता है उसका श्रवण ध्यानपूर्वक किया जाता है गोंधली जो कुछ गाता व बताता है व अत्यंत ज्ञानवर्धक तथा मनोरंजन पूर्ण होता है।

पौराणिक एवं पारंपरिक आख्यान को नाट्यरूप में प्रस्तुत किया जाता है। कभी-कभी विषय से भटक जाने पर विषयांतर भी किया जाता है। गोंधली के गीतों का मुख्य उद्देश्य आध्यात्म तथा उपदेशपरक नीति-वचन को गा-गाकर जन-समाज तक पहुँचाना है।

### नागमंत्रियों के भजन

मराठी लोक-संस्कृति के अंतर्गत एक प्रमुख जाति के रूप में नागमंत्रि जाति मानी गई है। मराठवाडा में नागमंत्रि जाति का प्रमुख कार्य सर्प का विष उतारना माना जाता है। सर्प-विष उतारने हेतु एक विशिष्ट विधि को अपनाया जाता है जिसके अंतर्गत सर्पदंश होने पर व्यक्ति पर विष के प्रभाव को जानने के लिए उस व्यक्ति विशेष को हरी मिर्च या नीम की पत्तियाँ खाने के लिए दी जाती हैं। विषबाधा हुई है या नहीं इसके द्वारा ज्ञात होता है यदि विषबाधा हुई है तो नागमंत्रि द्वारा विशिष्ट चाल पर भजन गाकर विष उतारा जाता है। इन भजनों को ‘बाण्या के भजन’ की संज्ञा भी प्रदान की जाती है। इन भजनों को गाते समय नागमंत्रि द्वारा कुछ तांत्रिक क्रियाएँ भी पूर्ण की जाती हैं। नागमंत्रि द्वारा मंत्रों के उच्चारण के साथ-साथ औषधियों तथा वनस्पतियों का भी उपयोग किया जाता है।

बाण्या गाने से पहले खोपरा, नारियल, नींबू, सिंदूर, कर्पूर, शक्कर, दूध, गुलाल, गोमूत्र, नीम की टहनी एवं पाँच धानों की आरास की जाती है उसके ऊपर कलश तथा नागवेली के पत्ते एवं फूल रखे जाते हैं।<sup>12</sup>

भजन गाना शुरू करने से पहले एक नमन गीत गाया जाता है। इसमें पंद्रह नमन होते हैं जिसमें अंतिम नमन श्रीकृष्ण को किया जाता है। बहुत से भजन मंत्ररूप में होते हैं। लोगों का मानना है कि इस भजन को गाने के समयांतराल में जिस व्यक्ति को सर्पदंश हुआ है उसके शरीर में साँप का संचार होता है तथा विष का असर समाप्त होता है। इस भजन को गाने के लिए नागमंत्रि का होना अति आवश्यक है क्योंकि विष उतारने की इस क्रिया के लिए अलग से साधना करनी पड़ती है।

इस प्रकार नागमंत्रियों की आवश्यकता तथा उनकी इस कला को समाज में मराठी घुमंतू समुदाय के द्वारा प्रसारित किया जा रहा है जो अपनी सेवा द्वारा समाज की भलाई करते हैं तथा दान में प्राप्त हुई वस्तुओं से अपनी अजीविका चलाते हैं।

**भेदिक-** भेदिक को शाहिरी काव्य का भाग भी माना जाता है। मराठी घुमंतू जाति के अंतर्गत इस जाति द्वारा मराठी लोक-जीवन में व्याप्त लोक-संस्कृति तथा लोकरंजन, लोक-प्रबोधन तथा धार्मिक आराधना में अपनी अहम भूमिका का निर्वाहण किया गया है। भेदिका शाहिरी को लोक प्रकटन संस्था के रूप में जाना जाता है।

ग्राम देवता हेतु आयोजन में तथा उरूस के संदर्भ में कलगीतुरा आयोजित किये जाते हैं जिसमें विभिन्न जातियाँ व स्तर के लोगों द्वारा भेदिक गाये जाते हैं | विभिन्न वाद्य यंत्र जैसे डफ और तुणतुणे की सहायता से सामान्य जन को समझ आने योग्य भाषा में आध्यात्मिक बातें बताई जाती हैं | कलगी पक्ष के शाहिर शक्ति के उपासक होते हैं तथा तुरा पक्ष के शाहिर शिव के उपासक होते हैं | उनकी आमने-सामने स्पर्धा होती है जिसके अंतर्गत कूट प्रश्न पूछे जाते हैं | यह प्रश्न-उत्तर का कार्यक्रम कभी-कभी दो-चार दिन की अवधि तक भी आयोजित किया जाता है |

भेदिक सादर करते समय सर्वप्रथम गणपति की स्तुति करते हैं | एक प्रधान शाहिर डफ लेकर आगे गाता है तथा अन्य साथी अपने वाद्य यंत्रों के साथ-साथ उसका सहयोग करते हैं | आध्यात्मिक कथा के गायन के पश्चात् कथात्मक तथा रंजनात्मक आख्यान गाये जाते हैं जिन्हें 'ऐकीव' कहा जाता है | ऐकीव के विशिष्ट्य की महत्ता उसके अंतर्गत पात्रों के सजीव प्रदर्शन, संघर्षपूर्ण नाट्य, करूणापूर्ण विविध भावना, अप्रतिम निवेदन कौशल, अद्भुत वातावरण रंजकता, हास्य-विनोद तथा कहीं-कहीं अतिशयोक्तिपूर्ण घटना प्रसंगों द्वारा मानी जाती है |

भेदिक द्वारा भेद अर्थात् रहस्य जो सामान्य जन को ज्ञात न हो उन्हें भेदिक लावणी के प्रयोग द्वारा उजागर किया जाता है जिसके लिए गायन विधि को अपनाया जाता है | रचना गायन के अंत में शाहिर अपना नाम बताता है | यह रचना सामूहिक न होकर प्रमुख भेदिक द्वारा प्रस्तुत की जाती है जिसके कारण इसका समावेश सामूहिक लोकगीतों में नहीं होता | इन गीतों द्वारा मराठी लोक-संस्कृति को गीतों के माध्यम से भेदिक स्थान-स्थान पर प्रचारित-प्रसारित करते हैं |

#### शाहिरी (लावणी-पोवाडा)-

शाहिरी वाङ्मय का निर्माण सन् १६८० से १८०० के बीच माना जाता है | १६८० से १७०७ तक के २७ वर्षों के समयान्तराल में उत्तर भारत से आए हुए सैन्य मराठी सल्तनत में शामियाना डाल कर अस्थायी रूप से रहने लगे थे | इसलिए उत्तर भारतीय सेनाएँ ऐय्याषी और रंगीले बनने लगे थे सैनिकों द्वारा अपने मनोरंजन हेतु आस-पास के गाँवों से नाचने-गाने वाले लोगों के गुट बनाए | इस समय महाराष्ट्र प्रांत में गोंधली, डवरी, कोल्हाटी आदि गाने-बजाने वाले लोगों के समूदाय थे | इन विभिन्न घुमंतू जनजातियों में अनेक कलाकारों का जन्म हुआ जिनके द्वारा 'शाहिरी' कविता का उत्कर्ष हुआ |

वर्तमान समय में जो शाहिरी काव्य हमें उपलब्ध होता है वह पानीपत के युद्ध के बाद का है | उसमें मराठी लोक-संस्कृति का इतिहास तथा मराठों की वीरता एवं स्वाभिमान का बहुत सुंदर वर्णन उपलब्ध होता है जिसके अंतर्गत इतिहास में वर्णित बाजीराव की मृत्यु के पश्चात् भले ही पराक्रम मे क्षति दिखाई पड़ती है परंतु तत्पश्चात् भी उनका मर्दानी वाणा दिल को संतोष व मन को शांति प्रदान करने में सक्षम सिद्ध हुआ | पोवाडा को लावणी की जोड़ प्राप्त हुई | वीरश्री, विलास, समाज-जीवन, धार्मिक विधि, परंपरा, लोक-जीवन एवं लोक-संस्कृति का सुंदर दर्शन हमें मराठी शाहिरी काव्य द्वारा प्राप्त होता है |

शाहिरी वाङ्मय को मराठी वाङ्मय में स्वतंत्र दर्जा प्रदान किया गया है | इसके द्वारा मुस्लिम आक्रमण के पश्चात् अरबी, फारसी भाषा के सामान्य जनजीवन पर पड़ने वाले प्रभाव को भी दर्शाया गया है |

#### निष्कर्ष-

ये सभी घुमंतू जनजातियाँ अपने शौक के लिए नहीं घूमती थी बल्कि उनका व्यवसाय व अजीविका का साधन ही भ्रमण पर आश्रित था | तमाम घुमंतू जनजातियों और इनके पारंपरिक व्यवसायों के विषय में जो जानकारी प्राप्त होती है तदानुसार 'बँजारे' पशुओं पर माल ढोने (मुख्यतः नमक और मुल्तानी मिट्टी) का काम किया करते थे, 'गाडिया-लुहार' जगह-जगह जाकर औजार बनाते तथा बेचते थे, 'बावारिये' जानवरों का शिकार और उनके अंगों का व्यापार करते थे, 'नट' नृत्य और करतब दिखाते थे, भोपा स्थानीय देवताओं के आख्यान गाते थे, सिकलीगर हथियारों में धार लगाते थे, 'सिंगीवाल; हिरन के टूटे हुए सींगों से लोगों का इलाज करते थे और इन्हें प्राकृतिक औषधियों का ज्ञाता समझा जाता था | 'कुचबंदा' मिट्टी के खिलौने बनाते थे, 'कलंदर' भालुओं और बंदरों के करतब दिखाते थे, 'ओढ' नहर बनाने और जमीन को समतल करने का काम करते थे | 'जागा' लोगों की

कई पीढ़ियों का ब्यौरा रखते थे और जजमानी में जगह-जगह जाते थे, 'बहूरूपिये' और 'बाजीगर' हाथ की सफाई द्वारा लोगों का मनोरंजन करते थे |

इनके द्वारा चाहे कोई भी व्यवसाय अपनाया गया परंतु इन मराठी घुमंतू जातियों के द्वारा अपनी लोक-संस्कृति तथा लोक-जीवन की महक अन्य प्रांतों तथा क्षेत्रों में उसके वैशिष्ट्य व मोहक रूप को प्रदर्शित करती नज़र आती है जिसके फलस्वरूप मराठी संस्कृति की अनोखी व अनुपम छवि सबको अपनी तरफ आकर्षित करने में समर्थ सिद्ध होती है |

#### संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कांबले संतोष, मराठी लोक-संस्कृति के उपासकों के गीत, स्रवंति, वर्ष-६४, अंक-३, जून- २०१९